

अध्याय - 1 | पुष्पी पादपों में लैंगिक जनन

QUIZ
PART-01

1. पुष्प किस वर्ग के पौधों का आकर्षक अंग होता है?

- A. कवक
B. आवृतबीजी (एन्जियोस्पर्म)
C. शैवाल
D. ब्रायोफाइट (B)

व्याख्या: पुष्प आवृतबीजियों का प्रमुख प्रजनन अंग है, जो यौन प्रजनन की प्रक्रिया में सहायक होता है।

2. पुष्प का कौन-सा भाग नर जनन अंग कहलाता है?

- A. स्त्रीकेसर
B. पुंकेसर
C. दलपुंज
D. बाह्यदल (B)

व्याख्या: पुंकेसर पुष्प का नर जनन अंग होता है जिसमें तंतु और परागकोश सम्मिलित होते हैं।

3. परागकोश में कितने कोष्ठ पाए जाते हैं?

- A. एक
B. दो
C. तीन
D. चार (B)

व्याख्या: प्रत्येक पुंकेसर के परागकोश की प्रत्येक पाली में दो कोष्ठ होते हैं।

4. पुंकेसर का ऊपरी सिरा पुष्प के किस भाग से जुड़ा होता है?

- A. दलपुंज
B. पुष्पासन
C. बाह्यदल
D. वर्तिकाग्र (B)

व्याख्या: तंतु का शीर्ष भाग पुष्पासन से जुड़ा होता है जिससे पुंकेसर पुष्प में स्थिर रहता है।

5. लघुबीजाण्डधानी की सबसे आंतरिक परत कौन-सी होती है?

- A. बाह्यत्वचा
B. एन्डोथेलियम
C. मध्य परत
D. टैपेटम (D)

व्याख्या: टैपेटम लघुबीजाण्डधानी की सबसे आंतरिक परत होती है जो परागकणों को पोषण प्रदान करती है।

6. टैपेटम की कोशिकाओं का क्या लक्षण होता है?

- A. कोशिकाएँ रिक्त होती हैं
B. जीवद्रव्य से भरी होती हैं और बहुकेंद्रक होती हैं
C. कोई केन्द्रक नहीं होता
D. बाहरी आवरण नहीं होता (B)

व्याख्या: टैपेटम की कोशिकाएँ सघन जीवद्रव्य से भरी होती हैं और इनमें एक से अधिक केन्द्रक पाए जाते हैं।

7. परागकोश की संरचना में कितनी भित्तियाँ होती हैं?

- A. दो
B. तीन
C. चार
D. पाँच (C)

व्याख्या: परागकोश चार भित्तियों से बना होता है – बाह्यत्वचा, एन्डोथेलियम, मध्य परत, और टैपेटम।

8. परागकोश में बनने वाले चार कोनों पर क्या उपस्थित होता है?

- A. बीजाणुजनक ऊतक
B. भ्रूणकोष
C. वर्तिका
D. दलक (A)

व्याख्या: परागकोश के चारों कोनों पर लघुबीजाणुजनक ऊतक उपस्थित होता है जिससे परागकण विकसित होते हैं।

9. पुष्प का लंबा और पतला डंठल जैसा भाग क्या कहलाता है?

- A. वर्तिका
B. तंतु
C. दलपुंज
D. बाह्यदल (B)

व्याख्या: पुंकेसर का लंबा पतला भाग तंतु कहलाता है, जो परागकोश को सहारा देता है।

10. परागकोश में परिपक्व होने पर बनने वाला थैला क्या कहलाता है?

- A. बीजाण्ड
B. पराग पुटी (पोलन सैक)
C. बीजाणु
D. भ्रूण थैली (B)

व्याख्या: परिपक्व होने पर परागकोश की दीवारें खुलकर पराग पुटी बनाती हैं, जिसमें परागकण स्थित रहते हैं।